

बरमूडा ट्रायंगल का रहस्य क्या समुद्र के नीचे सुलझ गई पहेली?

वर्षिय सूची (Table of Contents):

- >> बरमूडा ट्रायंगल का रहस्य क्या सदियों पुरानी पहेली सुलझने वाली है?...
- >> बरमूडा ट्रायंगल क्या है और इसका भूगोल?...
- >> इतिहास के पन्नों से कोलंबस से लेकर अब तक की गायब होने की घटनाएं...
- >> विमानों और जहाजों के लापता होने के पीछे के हैरान करने वाले मामले...
- >> एयर बम और हेक्सागोनल बादल नई वैज्ञानिक थ्योरी...
- >> मिथेन गैस वसिफोट और पानी का घनत्व...
- >> मैग्नेटिक फील्ड और इलेक्ट्रॉनिक फॉग का रहस्य...
- >> क्या बरमूडा ट्रायंगल का सच अब सामने आ गया है? नषिकर्ष...
- >> अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न...

बरमूडा ट्रायंगल का रहस्य: क्या सदियों पुरानी पहेली सुलझने वा

मानव इतिहास हमेशा से रहस्यों, अनसुलझे सवालों और कुदरत के करश्मों से भरा रहा है। पृथ्वी पर कई ऐसी जगहें हैं, जिनके बारे में सोचते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं, और ऐसा ही एक सबसे बड़ा और डरावना रहस्य बरमूडा ट्रायंगल (Bermuda Triangle) का है। पछिले 500 सालों से इस खास भौगोलिक इलाके ने वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं, नाविकों और आम लोगों को गहरे असमंजस में डाल रखा है। इस क्षेत्र से गुजरने वाले 50 से अधिक विशालकाय पानी के जहाज (Ships) और दर्जनों की संख्या में लड़ाकू व यात्री विमान (Planes) अचानक हवा में या समुद्र की गहराइयों में ऐसे गायब हुए कि उनका न तो कभी कोई मलबा मिला और न ही किसी इंसान का कोई सुराग या लाश। बरमूडा ट्रायंगल की यह खौफनाक मसिद्री दुनिया को डराती रही है, लेकिन हाल ही में वैज्ञानिकों को समुद्र के नीचे कुछ ऐसे ठोस सबूत और नई जानकारीयां मिली हैं, जिनोंने इस सदियों पुरानी पहेली को सुलझाने की उम्मीदें जगा दी हैं। क्या वाकई इस बार बरमूडा ट्रायंगल का पर्दाफाश हो गया है? क्या वैज्ञान ने उन सभी दावों को सच साबति कर दिया है जो अब तक सिर्फ कल्पना लगते थे? इस वसितृत एक्सप्लेनर में हम इस पूरे घटनाक्रम, इसके भूगोल, इतिहास और इसके पीछे की वैज्ञानिक थ्योरीज का विश्लेषण करेंगे।

बरमूडा ट्रायंगल क्या है और इसका भूगोल?

भौगोलिक दृष्टिसे बरमूडा ट्रायंगल को समझना बेहद जरूरी है ताकि इसके दायरे और स्थितिका सटीक अंदाजा लगाया जा सके। यह रहस्यमयी क्षेत्र उत्तरी अटलांटिक महासागर (North Atlantic Ocean) के एक बड़े हिस्से में फैला हुआ है। जब हम इसके तीन छोरों या कोनों की बात करते हैं, तो इसमें अमेरिका का फ्लोरिडा तट (Florida Coast), यूनाइटेड किंगडम का क्षेत्र बरमूडा द्वीप (Bermuda

Island), और कैरिबियन क्षेत्र में स्थिति प्यूरटो रिको द्वीप (Puerto Rico Island) शामिल है। इन तीनों बंदियों को आपस में मलाने पर एक त्रिकोण या त्रिभुज (Triangle) जैसी आकृति बनती है, जिसे आम बोलचाल और वैज्ञानिक भाषा में बरमूडा त्रायंगल कहा जाता है। इस पूरे त्रिकोणीय क्षेत्र का कुल क्षेत्रफल लगभग 13 लाख वर्ग किलोमीटर (approx. 500,000 square miles) के विशाल दायरे में फैला हुआ है। यह महासागर का एक बहुत ही व्यस्त व्यापारिक और उड़ान मार्ग रहा है, जिसके ऊपर से हर दिन अनगिनत अंतरराष्ट्रीय उड़ानें गुजरती हैं और इसके नीचे से बड़े पैमाने पर जलपोत आवागमन करते हैं। इसी व्यस्तता के कारण इस क्षेत्र में होने वाली दुर्घटनाएं और रहस्यमयी गायब होने की घटनाएं पूरी दुनिया को और अधिक वचिलित करती हैं। इस क्षेत्र के आसपास समुद्र की गहराई भी अत्यधिक है, जो खोज अभियानों को बेहद जटिल और चुनौतीपूर्ण बना देती है।

इतिहास के पन्नों से: कोलंबस से लेकर अब तक की गायब होने की घटनाएं

बरमूडा त्रायंगल से जहाजों और विमानों के गायब होने का इतिहास बहुत पुराना है और इसकी शुरुआत आज से सैंकड़ों साल पहले हो गई थी। साल 1492 की ऐतिहासिक यात्रा को कौन भूल सकता है, जब महान नाविक क्रिस्टोफर कोलंबस (Christopher Columbus) अपनी तीन बड़ी नौकाओं और 90 लोगों के दल के साथ इस रास्ते से गुजर रहे थे, तो उन्होंने अपनी लॉगबुक में कुछ बेहद असामान्य और डरावना दर्ज किया था। उनके अनुसार, उन्होंने समुद्र में आग की लपटें उठते हुए देखी थी और उनके जहाज का कंपास (Compass) अचानक पूरी तरह से असामान्य और अनियंत्रित व्यवहार करने लगा था। यह वही कोलंबस है जिन्होंने आगे चलकर अमेरिका की खोज की थी, लेकिन बरमूडा का यह अनुभव उनके लिए भी एक खौफनाक सपना बन गया था।

इसके बाद, समय-समय पर इस इलाके से त्रासदियों की खबरें आती रही। आधिकारिक दस्तावेजों के अनुसार, बरमूडा त्रायंगल से शपि गायब होने का पहला बड़ा और दर्ज मामला 31 दिसंबर 1812 का है। पैट्रियट (Patriot) नाम का एक अमेरिकी जहाज साउथ कैरोलिना से न्यूयॉर्क के लिए रवाना हुआ था। इस जहाज में उस समय के अमेरिकी उपराष्ट्रपति हारून बर् की लाइली बेटी थियोडोसिया (Theodosia) भी सवार थी। दुर्भाग्यवश, यह जहाज बरमूडा त्रायंगल के इलाके में प्रवेश करते ही अचानक हमेशा के लिए गायब हो गया, जिसका कोई अता-पता नहीं चला।

इस घटना के ठीक 3 साल बाद, अमेरिकी नौसेना का जहाज USS एपेर्वियर (USS Epervier) भी इसी रहस्यमयी क्षेत्र में लापता हो गया। इस हादसे में जहाज पर सवार 135 लोग हमेशा के लिए काल के गाल में समा गए और सबसे ज्यादा परेशान करने वाली बात यह थी कि न तो जहाज का कोई मलबा मिला और न ही एक भी शव बरामद हुआ। इसके बाद, मार्च 1918 में अमेरिका का विशालकाय कोयला ढोने वाला जहाज USS साइक्लोप्स (USS Cyclops) के गायब होने की घटना ने पूरी दुनिया को हिलाकर रख दिया। इस घटना के बाद से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खतरनाक बरमूडा त्रायंगल की चर्चा बहुत ज्यादा तेज हो गई। उस समय इस जहाज में 10 हजार टन मैंगनीज लदा हुआ था और कुल 309 लोग सवार थे। आज 108 साल बीत जाने के बाद भी इस जहाज और उस पर मौजूद लोगों का कोई सुराग या आधिकारिक जानकारी नहीं मिली है।

विमानों और जहाजों के लापता होने के पीछे के हैरान करने वाले म

बीते 500 सालों में बरमूडा ट्रायंगल के ऊपर से गुजरने वाले विमानों और समुद्र में तैरने वाले जहाजों के गायब होने के 50 से ज्यादा बड़े और दर्ज इंसीडेंट्स मौजूद हैं, जो किसी भी रोगटे खड़े कर देने वाली थ्रिलर फिल्म से कम नहीं हैं।

इनमें सबसे ज्यादा चर्चा घटना 5 दिसंबर 1945 की है, जब अमेरिकी नौसेना के 5 TBM एवेंजर बॉम्बर (TBM Avenger) विमान एक रूटीन ट्रेनिंग मिशन के लिए उड़ान भरने निकले। इस पूरे स्क्वाड्रन में एक अनुभवी कैप्टन और 13 ट्रेनी पायलट्स मौजूद थे। उड़ान भरने के कुछ देर बाद ही ये सभी पांचों विमान रेडियो संपर्क से बाहर हो गए और रहस्यमयी तरीके से गायब हो गए। इन लापता विमानों और पायलटों को खोजने और बचाने के लिए 13 लोगों के दल के साथ दो मार्टिन मेरिनर (Martin Mariner) विमानों को राहत कार्य के लिए भेजा गया, लेकिन वडिबना देखिए कवि दोनो बचाव विमान भी वापस नहीं लौटे और वे भी इसी त्रिकोण के शिकार हो गए।

कूर घटनाओं का यह सलिसला यही नहीं रुका। 28 दिसंबर 1948 को 39 लोगों को अपने साथ लेकर प्यूरटो रिको से उड़ा एक डगलस DC-3 (Douglas DC-3) विमान अपने गंतव्य मियामी (Miami) पहुँचने से मात्र 50 मील पहले ही रडार से गायब हो गया और कभी रनवे पर नहीं उतरा। तकनीकी रूप से उन्नत माने जाने वाले दौर में भी यह सलिसला जारी रहा। मई 1968 में अमेरिका की एक अत्याधुनिक न्यूक्लियर पनडुब्बी USS स्कॉर्पियन (USS Scorpion) इसी इलाके से गुजरते हुए लापता हो गई, जिसके डूबने का असली कारण आज भी पूरी तरह से अज्ञात और रहस्यमयी बना हुआ है।

आगे बढ़ते हुए, 15 अक्टूबर 1976 को 590 फीट लंबा एक विशाल मालवाहक जहाज अपने 37 क्रू मेंबर्स के साथ ब्राजील से फ्लोरिडा जाते समय बरमूडा क्षेत्र में संपर्कवहीन हो गया। इस मामले में थोड़ा सा मलबा और एक लाइफबोट बरामद की गई, जो इस बात की गवाही दे रही थी कि जहाज किसी भीषण हादसे का शिकार हुआ है, लेकिन पूरा ढांचा कहां गया, यह आज भी एक प्रश्नचिह्न है। इक्कीसवीं सदी में भी यह खतरा कम नहीं हुआ। 18 जून 2003 को एक नवविवाहित जोड़ा फ्रैंक और रोमीना लियोन अपनी नई 16 फीट की बोट से फ्लोरिडा तट से निकले और समंदर की गहराइयों में ऐसे गुम हुए कि कभी वापस नहीं आए। वही, 15 मई 2017 को 4 लोगों को प्यूरटो रिको से फ्लोरिडा लेकर जा रहा एक छोटा नर्सी विमान Mitsubishi MU-2B-40 अचानक रडार से गायब हो गया और फिर कभी किसी को इसका पता नहीं चला।

एयर बम और हेक्सागोनल बादल: नई वैज्ञानिक थ्योरी

बरमूडा ट्रायंगल के इस सदियों पुराने और खौफनाक रहस्य से पर्दा उठाने के लिए वैज्ञानिकों और मौसम वैज्ञानिकों ने लगातार अध्ययन किया है। इस दिशा में सबसे हालिया और तार्किक मानी जाने वाली थ्योरी अक्टूबर 2016 में सामने आई। कोलोराडो स्टेट यूनिवर्सिटी (Colorado State University) के प्रसिद्ध मेटियोलॉजिस्ट रैंडी कैंवेनी (Randy Cerveny) ने एक चौकाने वाला खुलासा किया। उन्होंने उपग्रहों (Satellites) से प्राप्त आंकड़ों और रडार इमेजरी का विश्लेषण करके बताया कि बरमूडा ट्रायंगल के ऊपर आसमान में 20 से 55 मील चौड़े, 6 कोनों वाले यानी हेक्सागोनल (Hexagonal) बादल बनते हैं।

मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि ये अजीबोगरीब हेक्सागोनल बादल हवा में एयर बम (Air Bombs) की तरह काम करते हैं। सरल शब्दों में कहे तो ये बादल प्रकृतिद्वारा बनाए गए अदृश्य हवा के बम हैं जो वातावरण में भयानक वसिफोट जैसी ऊर्जा और ताकत पैदा करते हैं। इन बादलों के साथ लगभग 273 किलोमीटर प्रति घंटा (273 km/h) की प्रचंड रफ्तार वाली तूफानी हवाएं चलती हैं। जब ये विशालकाय हेक्सागोनल बादल और इतनी तेज रफ्तार वाली हवाएं आपस में मिलती हैं, तो ये समुद्र की सतह पर अवश्विनीय रूप से ऊंची और हसिक

लहरें पैदा करती हैं। जब कोई भी जहाज या कम ऊंचाई पर उड़ता हुआ विमान इन एयर बमों की चपेट में आता है, तो ये हवाएं और दबाव उन्हें पलक झपकते ही चकनाचूर कर सीधे समुद्र के तल में खींच ले जाती हैं। यह थ्योरी इस बात का वैज्ञानिक स्पष्टीकरण देती है कि आखिर क्यों इन हादसों में जहाजों का कोई मलबा तक नहीं मिलता, क्योंकि भयंकर दबाव के कारण वे समुद्र की अथाह गहराइयों में समा जाते हैं।

मीथेन गैस वसिफोट और पानी का घनत्व

वैज्ञानिकों द्वारा दी गई दूसरी सबसे प्रमुख और पुख्ता थ्योरी मीथेन गैस वसिफोट (Methane Gas Hydrate Explosion) से जुड़ी है। वर्ष 1999 में ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी (Oxford University) के जाने-माने भूवैज्ञानिक डॉ. बेन क्लेनेल (Dr. Ben Clennell) ने इस सिद्धांत को दुनिया के सामने रखा। उनके शोध के अनुसार, बरमूडा द्रायंगल के अंतर्गत आने वाले समुद्र के तल (Ocean Floor) के नीचे प्राकृतिक मीथेन हाइड्रेट गैस के विशाल भंडार और चैंबर दबे हुए हैं।

भूवैज्ञानिकों का मानना है कि समुद्र के नीचे होने वाली भूगर्भीय हलचलों या दबाव के कारण ये मीथेन गैस के चैंबर अचानक फट सकते हैं। जब इतनी भारी मात्रा में गैस एक साथ समुद्र की सतह की ओर ऊपर उठती है, तो पूरा पानी उबलने जैसा महसूस होता है और पानी में बड़े पैमाने पर झाग (Foam) बन जाता है। इस प्रक्रिया के कारण पानी का घनत्व (Density) और उछाल (Buoyancy) इतनी तेजी से और इतना कम हो जाता है कि किसी भी विशालकाय जहाज के लिए भी उस पानी में तैरना नामुमकिन हो जाता है।

ऑस्ट्रेलिया में स्थित विभिन्न शोध संस्थानों और विश्वविद्यालयों में किए गए प्रायोगिक परीक्षणों (Laboratory Experiments) में यह बात साबित हो चुकी है कि पानी में उठने वाले गैस के बुलबुले किसी भी तैरते हुए जहाज को पल भर में पानी के अंदर डुबो सकते हैं। इसके अलावा, अगर यह अत्यधिक ज्वलनशील मीथेन गैस पानी की सतह को चीरकर हवा में ऊपर तक पहुँच जाए, तो हवा में इसका घनत्व विमानों के इंजन के लिए घातक हो सकता है। जैसे ही यह गैस ऑक्सीजन के संपर्क में आती है या विमान के जेट इंजन में जाती है, तो इंजन को पर्याप्त ऑक्सीजन न मिलने या दहन प्रक्रिया बाधित होने से प्लेन का इंजन तुरंत बंद हो सकता है, जिससे विमान क्रैश होकर समुद्र में गरि जाता है।

मैग्नेटिक फील्ड और इलेक्ट्रॉनिक फॉग का रहस्य

बरमूडा द्रायंगल के रहस्यों के पीछे चुंबकीय या मैग्नेटिक इफेक्ट (Magnetic Effect) की थ्योरी भी दशकों से बहुत ज्यादा लोकप्रिय रही है। 1950 के आसपास यह चर्चा जोरों पर थी कि बरमूडा द्रायंगल पृथ्वी की उन चुनदा जगहों में से एक है, जहाँ से एगोनिक लाइन (Agonic Line) गुजरती है। इस विशेष रेखा की खूबी यह होती है कि यहाँ पर चुंबकीय सुई (Magnetic North) और पृथ्वी का वास्तविक भौगोलिक उत्तर (True North) दोनों एक ही दिशा में सटीक संरेखित होते हैं।

इस प्राकृतिक तथ्य से अनजान या अनभिज्ञ कई पुराने नाविक और पायलट अपने कंपास की रीडिंग को गलत समझ लेते हैं, जिससे उन्हें दिशा का सही ज्ञान नहीं हो पाता और वे रास्ता भटककर किसी दुर्घटना का शिकार हो जाते हैं। इसके अलावा, कई भू-भौतिकीय अध्ययनों में यह भी दावा किया गया है कि बरमूडा द्वीप के ठीक नीचे एक बहुत ही मजबूत और असामान्य मैग्नेटिक फील्ड (Magnetic Field) मौजूद है, जो दिशा-सूचक यंत्रों को भ्रमति कर सकती है।

चुंबकीय वसिंगतियों के अलावा, एक और अत्यधिक रहस्यमयी थ्योरी इलेक्ट्रॉनिक फॉग (Electronic Fog) और टाइम वार्प (Time Warp) की है। वर्ष 1970 में फ्लोरिडा के एक बहुत ही अनुभवी पायलट ब्रूस जेर्नोन (Bruce Gernon) ने एक ऐसा दावा किया जिसने सभी को चौंका दिया। उन्होंने बताया कि जब वे एंड्रोस आइलैंड (Andros Island) से फ्लोरिडा की ओर उड़ान भर रहे थे, तो उन्होंने रास्ते में एक बहुत ही अजीब और अनोखे आकार का बादल देखा, जो धीरे-धीरे एक विशाल सुरंग (Tunnel) में तब्दील हो गया।

ब्रूस के अनुसार, उस बादलों की सुरंग के अंदर एक अजीबोगरीब इलेक्ट्रॉनिक फॉग या कोहरा छाया हुआ था, जिसके प्रभाव में आते ही उनके विमान के सभी नेविगेशन और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण (Devices) अचानक काम करना बंद हो गए थे। जब वे किसी तरह अपनी सूझबूझ से उस रहस्यमयी सुरंग से बाहर निकले, तो उन्होंने महसूस किया कि उन्होंने केवल 3 मिनट और 20 सेकंड के भीतर लगभग 100 मील (160 किलोमीटर) की दूरी तय कर ली थी, जबकि सामान्य परिस्थितियों में इस दूरी को पूरा करने में कम से कम एक घंटे का समय लगता है। इस घटना ने टाइम ट्रैवल और स्पेस-टाइम डिस्टॉर्शन की संभावनाओं को जन्म दिया, जिसे उन्होंने आगे चलकर 2016 में अपनी प्रकाशित किताब 'बयॉन्ड द बरमूडा ट्रायंगल (Beyond the Bermuda Triangle) में विस्तार से लिखा है।

क्या बरमूडा ट्रायंगल का सच अब सामने आ गया है? नषिकर्ष

अगर हम वर्तमान में उपलब्ध आंकड़ों और वैज्ञानिक अनुसंधानों का समग्र मूल्यांकन करें, तो यह स्पष्ट होता है कि बरमूडा ट्रायंगल कोई जादुई या अलौकिक जगह नहीं है, बल्कि यह चरम प्राकृतिक और मौसमी घटनाओं का एक घातक संयोजन है। आधुनिक उपग्रहों, उन्नत रडार प्रणालियों और महासागरीय अनुसंधान (Oceanic Research) के कारण अब वैज्ञानिक इस नषिकर्ष पर पहुंच रहे हैं कि सदियों से चली आ रही इस पहेली के पीछे कोई भूत-प्रेत या एलियंस (Aliens) नहीं, बल्कि प्राकृतिक प्रचंड शक्तियां जिम्मेदार हैं।

भले ही सोशल मीडिया और इंटरनेट पर समय-समय पर नई खोजों और समुद्र के नीचे अजीबोगरीब संरचनाओं (जैसे परिमडि या रहस्यमयी मलबे) मिलने की खबरें वायरल होती रहती हैं, लेकिन विज्ञान अभी भी इन दावों को पुख्ता करने के लिए ठोस सबूतों की मांग करता है। आधुनिक युग में जहाजों और विमानों में जीपीएस (GPS), उन्नत सोनार (Sonar) और ऑटो-पायलट तकनीक आ जाने के कारण बरमूडा ट्रायंगल में होने वाली दुर्घटनाओं में भारी गिरावट आई है।

अंततः, यह कहा जा सकता है कि बरमूडा ट्रायंगल का रहस्य अब धीरे-धीरे विज्ञान की चादर ओढ़कर सुलझता जा रहा है। हेक्सगोनल क्लाउड्स (एयर बम) और मीथेन गैस वसिफोट के सिद्धांतों ने उन सभी अनसुलझे सवालों के तार्किक जवाब दे दिए हैं, जो कभी इंसान को डराते थे। यह क्षेत्र अब केवल एक भौगोलिक आश्चर्य और रोमांच का विषय बनकर रह गया है, न कि कोई ऐसा खौफनाक दानव जो बनी किसी कारण के चीजों को नगल रहा हो।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न

नहीं, वैज्ञानिक और शोधकर्ता इस बात को सरि से खारजि करते हैं। बरमूडा ट्रायंगल में जहाजों और विमानों के गायब होने के पीछे पूरी तरह से प्राकृतिक और वैज्ञानिक कारण हैं, जैसे कि हेक्सगोनल बादल जो एयर बम बनाते हैं, समुद्र के नीचे मीथेन गैस का वसिफोट और अत्यधिक चुंबकीय क्षेत्र (Magnetic Field)। इसके पीछे किसी भी एलियन या अलौकिक शक्तिका कोई ठोस प्रमाण नहीं मिला है।

MSNTARGET.COM

<https://msntarget.com>

आधुनिक तकनीक, जीपीएस (GPS), उन्नत रडार सिस्टम और मजबूत सैटेलाइट कनेक्टिविटी के आ जाने से वर्तमान समय में बरमूडा ट्रायंगल में विमानों या जहाजों के रहस्यमयी तरीके से गायब होने की घटनाएं लगभग न के बराबर हो गई हैं। आज के नाविक और पायलट इन प्राकृतिक और मौसमी चुनौतियों से निपटने के लिए पूरी तरह से तैयार और सुसज्जित रहते हैं।